13

शब्द-सरोकार

(मालवा साहित्य कला मंच की साहित्यिक हिन्दी पत्रिका)

अंक 55, वर्ष 15 जुलाई–सितम्बर 2017

संस्थापक :
स्व० डॉ० प्रेमप्रकाश सिंह
संरक्षक :
श्रीमती डॉ० प्रेमप्रकाश सिंह
श्री जयप्रकाश सिंह धालीवाल
परामर्श :
डॉ० मनमोहन सहगल
प्रो० कुलवंत सिंह ग्रेवाल
डॉ० हरजिन्दर वालिया
डॉ० इन्द्रमोहन सिंह
सम्पादक :
डॉ० हुकुमचन्द राजपाल
संयुक्त सम्पादक :
डॉ० सुरेश नायक, डॉ० नविला, डॉ० रविदत्त 'कौशिश'
उपसम्पादक :
डॉ० कृष्ण भावुक
डॉ० मीनाक्षी काला
डॉ० सत नारायण
डॉ० वीरेन्द्र वालिया
डॉ० हरविन्दर कौर
प्रबन्ध सम्पादक :
श्री संजय राजपाल
आवरण-पृष्ठ :
प्रिं० वीरेन्द्र सिंह घुम्मण, श्री संजय राजपाल

सम्पर्क : गंगा सदन, 451, अर्बन एस्टेट, फेज - 1,
पटियाला - 147 002, (पंजाब)
मोबाइल : 0-99157-83050, 98156-06602 (Jalandhar)
email : sanjyotima@gmail.com

ISSN 2229 4732 SHABAD SAROKAR
यू० जी० सी० अनुमोदित

अनुक्रम

सम्पादकीय : 3-4.
आलेख : प्रेमप्रकाश सिंह 5, मनमोहन सहगल 7, हुकुमचन्द राजपाल 10, 27, नरेश 18, सुरेश नायक 23, नरेश कुमार 30, आशीष कुमार 32, अरुण कुमार शर्मा 35, लीम चन्द 37, निवेदिता सिंगला 42, सोनिया शर्मा 45, सरला त्रिपाठी पाण्डेय 49, राजदीप सिंह 53, मंजु रानी 57, सुरेश चन्द मीणा 60, मानसी सक्सेना 63, रोशनी पवार 65, जगजीत कौर 67, एकता रानी 70, प्यारा सिंह 74, अंजू सिंह 78, परविन्दर कौर 80.
कविता : कुलवंत सिंह ग्रेवाल 9, इन्द्र मोहन सिंह 14, जयजयराम 26, कुलभूषण कालड़ा 28, शामलाल कौशल 28, ज्ञान प्रकाश 'पीयूष' 28, मानवता घुम्मन 29, कैलाश चन्द शर्मा 'शंकी' 48. राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर' 48, उदयकरण सुमन 52, विष्णु सक्सेना 56, माधव कौशिक 56, सूर्य प्रकाश मिश्र 56, जयदेव हसीजा 'प्रेमी' 62, अमरजीत सिंह व्रैच 62. उमेश शर्मा 62, मुक्ता अरोड़ा 64, शील कौशिक 64, महेन्द्र प्रताप पाण्डेय 'नन्द' 73, दिव्य सृष्टि 'दिव्या' 77, अमिता सागर 82, दीप बिलासपुरी 89. दीप्ति 90, बिशन सागर 93.
कहानी : सुनीता जैन 83, मधुकांत 87.
पुस्तक समीक्षा : आरती बंसल 90, रविदत्त कौशिश 91, सुकीर्ति भटनागर 92.
श्रद्धाजंलियाँ : 34, 36, 41, 48,
पत्र-प्रतिध्वनियाँ : 94.
लेखकीय पते : 95-96.

इस अंक का मूल्य : 80 रुपये (साधारण डाक-व्यय सहित) : **100 रुपये** (कूरियर/पंजीकृत डाक सहित).
वार्षिक : 250 रुपये साधारण डाक द्वारा (**कूरियर/पंजीकृत डाक द्वारा : 350 रुपये**), आजीवन : **1100 रुपये** साधारण डाक द्वारा (**कूरियर/पंजीकृत डाक द्वारा : 1500 रुपये**), विशिष्ट सदस्यता : **1500 रुपये**
प्राप्ति-स्थान : **गंगा सदन, 451, अर्बन एस्टेट, फेज – 1, पटियाला (पंजाब) – 147 002.**

हिन्दी लघुकथा-लेखन की दिशा में नया कदम

- आरती बंसल

लघुकथा आज के समय में बहुत ही चर्चित एवं लोकप्रिय विधा है। क्षण-विशेष में उपजे भावों, घटना व विचारों की कुशल गद्यात्मक अभिव्यक्ति लघुकथा का रूप लेती है।

अपने संक्षिप्त आकार एवं प्रभावपूर्ण शैली से लघुकथा पाठक के मन को झकझोर कर रख देती है। धीरे-धीरे लघुकथा ने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अपने पाँव पसारे है। परन्तु उल्लेखनीय यह है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास में लघुकथा विधा को कोई विशेष महत्त्व नहीं मिला। इसका प्रमुख कारण यह भी हो सकता है कि इसका विकास 70-80 के दशक के बाद भी अधिक हुआ है। इस दृष्टि से प्रो० रूप देवगुण कृत 'आधुनिक हिन्दी लघुकथा : आधार एवं विश्लेषण' पुस्तक का महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। इस पुस्तक के माध्यम से लेखक ने 61 लघुकथाकारों से विभिन्न प्रश्नों के उत्तर मंगवाकर प्रश्नोत्तरी शैली में लघुकथा से सम्बन्धित बहुत ही महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ उपलब्ध करवाई हैं। लेखक ने हरियाणा के 26 तथा देश के अन्य राज्यों के 35 लघु कथाकारों से एकत्र करके बहुत ही महत्त्वपूर्ण सामग्री का संकलन किया है। लघुकथाकारों द्वारा दिए गए प्रश्नों के उत्तरों के आधार पर लेखक ने जिस ढंग से सम्पूर्ण सामग्री का गहन अध्ययन करके निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं वह निश्चित ही लघुकथा के विकास के क्षेत्र में एक सराहनीय कदम है।

प्रथम लघुकथा का प्रश्न शीर्षक के अन्तर्गत प्रत्येक दशक के प्रमुख लघुकथाकारों की नवीनतम जानकारी उपलब्ध होती है।

लघुकथाकारों द्वारा लघुकथा पत्रिका का सम्पादन कार्य शीर्षक के अन्तर्गत उन पत्रिकाओं व सम्पादकों की जानकारी दी गई है, जो समय-समय पर जानकारी नवोदित लेखकों व शोधार्थियों के लिए बहुत ही उपयोगी है।

'शोधार्थी व शोध कार्य' शीर्षक के अन्तर्गत उन शोधार्थियों व शोध प्रबन्धों का परिचय मिलता है, जो लघुकथा विधा पर आधारित है। देश के विभिन्न लघुकथाकारों द्वारा प्रकाशित लघुकथा संग्रह व संकलन, लघुकथा प्रतियोगिता आदि से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ इस पुस्तक में उपलब्ध हैं।

अनुवाद कार्य से सम्बन्धित जानकारी के माध्यम से हमें देश-विदेश के विभिन्न लघुकथाकारों का परिचय एक साथ मिलता है। इनके अतिरिक्त 61 लघुकथाकारों की प्रकाशित रचनाओं, सम्मानित लघुकथाओं, विशेष सम्मान आदि की विशिष्ट जानकारियाँ प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से प्रो० देवगुण ने उपलब्ध करवाई है। यद्यपि लघुकथा विधा लोकप्रिय होते हुए भी तिरस्कृत ही रही है, तो प्रो० रूप देवगुण जो कि स्वयं भी लघुकथा के क्षेत्र में एक अविस्मरणीय हस्ताक्षर हैं, सदैव ऐसा महसूस करते हैं कि लघुकथा के क्षेत्र में इस तरह के कार्य निरन्तर होते रहने चाहिए। इसी कारण इन्होंने हरियाणा राज्य के विभिन्न जिलों में जिला स्तरीय लघुकथा मंच भी स्थापित किए हैं, ताकि सभी लघु कथाकार इस तरह के मंचों से जुड़ सकें तथा इस विधा के साथ पूरा न्याय हो सके। प्रस्तुत पुस्तक से पूर्व भी रूप देवगुण हिन्दी लघुकथा के क्षेत्र में 8 लघुकथा संकलनों का सम्पादन कर चुके हैं, जिसमें हरियाणा के लगभग सभी लघुकथाकारों की रचनाओं को स्थान मिला है। 'आधुनिक हिन्दी लघुकथा : आधार एवं विश्लेषण' पुस्तक लघुकथा के नवोदित लेखकों व शोधार्थियों के लिए नवीन मार्ग प्रशस्त करेगी।

* * * * *

मन

- दीप्ति

ख़्वाहिशों के पीछे मचलता
मन
उसी भंवर में
फँसा रह गया।
जो था
की कीमत न डालकर
जो नहीं था
को पाने की
लालसा में रह गया।
हाथों से
बहती रेत
की तरह
कीमती समय
निकलने पर
मन
पछताता रह गया।
अभिलाषाओं
के पीछे
भागता-मचलता
बिताकर सारी उम्र
अन्त में
खाली हाथ देख
मन
मसोसकर रह गया।

* * * * *

4

MAHMUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Issue-20, Vol-06, Oct. to Dec.2017

Vidyawarta®

International Multilingual Research Journal